## एकादशः पाठः

# सुभाषितानि

परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्।
वर्जयेत्तादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम्॥1॥

अपूर्वः कोऽपि कोशोऽयं विद्यते तव भारति।
व्ययतो वृद्धिमायाति क्षयमायाति सञ्चयात्।2॥

विना वेदं विना गीतां, विना रामायणीं कथाम्।
विना कविं कालिदासं, भारतं भारतं न हि॥3॥

उदये सविता ताम्रस्ताम्र एवास्तमेति च।
सम्पत्तौ च विपत्तौ च, महतामेकरूपता॥4॥

उद्यमं साहसं धैर्यं बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः।
षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र देवः सहायकः॥5॥

नरत्वं दुर्लभं लोके, विद्या तत्र सुदुर्लभा।
कवित्वं दुर्लभं तत्र, शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा॥6॥

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैवकुटुम्बकम्॥7॥

छायामन्यस्य कुर्वन्ति तिष्ठन्ति स्वयमातपे।
फलान्यपि परार्थाय वृक्षाः सत्पुरुषा इव॥8॥

निन्दन्तु नीतिनिपुणाः यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मीः समाविशतु, गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः॥9॥

### शब्दार्थाः

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सम्पत्तौ | — | सम्पत्ति में | एकरूपता | — | समानता |
| विपत्तौ | — | विपत्ति में | उदये | — | उदय होते समय में |
| महताम् | — | बड़ों का, | सविता | — | सूर्य |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ताम्रः | — | तांबे के समान लाल | नरत्वम् | — | मानवता |
| परोक्षे | — | पीछे | दुर्लभम् | — | कठिनता से प्राप्त |
| वर्जयेत् | — | रोके | कुटुम्बकम् | — | परिवार |
| क्षयमायाति | — | क्षीण होता है | लघुचेतसाम् | — | छोटे मन वालों का |
| भारति | — | हे सरस्वती जी | उदारचरितानाम् | — | उदार हृदय वालों का |
| निन्दन्तु | — | निन्दा करें | आतपे | — | धूप में |
| समाविशतु | — | अच्छे प्रकार से आए | परार्थाय | — | दूसरों के लिए |
| युगान्तरे | — | दूसरे युग में | सत्पुरुषाः | — | सज्जन व्यक्ति |
| यथेष्टम् | — | इच्छित को | स्तुवन्तु | — | स्तुति करें |

## अभ्यासः

**1. एकपदेन उत्तरं लिखत —**

क. सम्पत्तौ विपत्तौ च केषाम् एकरूपता?

ख. अस्तसमये सूर्यस्य वर्णः कः भवति?

ग. नरत्वं दुर्लभं कुत्र?

घ. केषां वसुधैवकुटुम्बकम्?

ङ. परार्थाय वृक्षाः कानि यच्छन्ति?

**2. एकवाक्येन उत्तरं लिखत —**

क. सूर्यस्य वर्णः ताम्रः कदा-कदा भवति?

ख. भारत्याः कोशः कस्मात् क्षयमायाति?

ग. वृक्षाणां स्वभावः कीदृशः?

घ. न्याय्यात्पथः पदमपि के न विचलन्ति?

ङ. लोके विद्या कीदृशी?

**3. सन्धिविच्छेदं कुरुत —**

क. कोशोऽयम्

ख. यथेष्टम्

ग. फलान्यपि

ङ. युगान्तरे

4. **श्लोकं पूरयत —**

विना वेदं विना गीतां .....................।

........................... भारतं भारतं न हि॥

5. **उचितं मेलयत —**

| | (अ) | | (ब) |
|---|---|---|---|
| क. | उदये सविता | – | भारतं भारतं न हि |
| ख. | अपूर्वः कोशः | – | ताम्रः |
| ग. | विना वेदं | – | तव भारति |
| घ. | न्याय्यात्पथः | – | सुदुर्लभा |
| ङ. | शक्तिस्तत्र | – | धीराः |

6. **अधोलिखितैः शब्दैः वाक्यरचनां कुरुत —**

क. देवः

ख. व्ययतः

ग. द्रुमः

घ. लक्ष्मीः

ङ. फलानि

**योग्यताविस्तारः —**

- पाठे दत्तानां श्लोकानां कण्ठस्थीकरणं कुरुत।

*वाग्भूषणं भूषणम्।*